भारत एवं नेपाल की धार्मिक एकात्मकता : एक ऐतिहासिक अध्ययन (नेपाली संस्कृत अभिलेखों के सन्दर्भ में)

बीज शब्द : धर्म, नेपाल-भारत धार्मिक एकात्मकता, ऐतिहासिक अध्ययन, नेपाल के संस्कृत अभिलेख

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

भारत एवं नेपाल धार्मिक दृष्टि से एकात्मक देश हैं। भारत और नेपाल के धार्मिक केन्द्र दोनों देशों के परस्पर मतावलम्बियों को आकर्षित करते रहे हैं। धार्मिक मान्यताएँ संस्कृत अभिलेख इस बात को प्रमाणित करते रहे हैं कि दोनो वर्तमान देश अत्यंत प्राचीन काल से आस्था एवं मान्यताओं में परस्पर अनुस्यूत हैं। इस शोध आलेख में संस्कृत के अभिलेखों के माध्यम से भारत एवं नेपाल की धार्मिक एकात्मकता एवं अखण्डता को अन्वेषित करने का प्रयास किया गया है।

कन्हैया सिंह
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास,
स्व० भगवंत पटेल पानमती देवी पी०जी० कॉलेज,
चन्दरपुर बसहियां बुजुर्ग,
महराजगंज।

प्रकृति प्रदत्त भौगोलिक स्थिति जहाँ भारत एवं नेपाल को एक सूत्र में बांधे हुए परिलक्षित होती है, वहीं यहाँ की संस्कृति, धार्मिक भावना, भाषा एवं लिपि में भी एकत्मकता का भाव समाहित है। भारतीय उपमहाद्वीप के हिमालयी तलहटी में बसे हुए इस देश में मनुष्यों के आगमन का स्पष्ट प्रमाण 9000 ई0पू0 मुं प्राप्त होता है।[1] उल्लेखनीय है कि नेपाल की राजधानी काठमाण्डू उपत्यका से नवपाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं जो भारतीय सभ्यताओं के समकालीन प्रतीत होते हैं।[2] भारतीय धार्मिक एवं लौकिक ग्रन्थों यथा- अष्टाध्यायी, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, पतंजलि का महाभाष्य आदि[3] में नेपाल का उल्लेख होना नि:सन्देह भारत एवं नेपाल की सतत अन्त: सांस्कृतिक प्रवाह को अभिव्यक्त करता है। यद्यपि दोनों देशों के इतिहास एवं संस्कृति पर अनेक शोध कार्य हो रहे हैं, तथापि नेपाली संस्कृत अभिलेखों के आलोक में व्यापक धार्मिक एकात्मकता विषय पर अध्ययन की अद्यावधि की आवश्यकता है।

एशिया के जिन देशों के साथ भारत के सहस्राब्दियों पूर्व घनिष्ठ संबंध रहे हैं उनमें नेपाल का नाम मुख्य है। नेपाल से भारत के प्रागैतिहासिक संबंध रहे हैं।[4] भारत व नेपाल के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रारम्भ भारत में मगध साम्राज्य की स्थापना के साथ हो जाता है।[5] आर्थिक-राजनैतिक संघर्षों में सबल शत्रु से बचाव हेतु जो पक्ष नेपाल की उपत्यका में शरण लेता था वह अपने साथ भारतीय संस्कृति के तत्व ले जाता था, जो नेपाल के आर्यीकरण में सहायक हुआ।[6]

नेपाल में मुख्यत: चार राजवंशों- नेमुनि (गोपाल), अहीर, किरात और लिच्छवि ने प्राचीन नेपाल के इतिहास में शासन किया। इनमें से दो अहीर और लिच्छवि राजवंश के आधिपत्य में भारतीय क्षेत्र भी थे। एशिया के दूसरे देशों की भाँति नेपाल से भारत के संबंधों की सजीव एवं सुदृढ़ परम्परा बौद्ध धर्म के प्रवेश के बाद बनी। भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के साथ नेपाल गये थे।[7] नेपाल में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाली जाति किरात मानी जाती है। इनके राजा जितेदस्ती (520 ई0पू0) के समय भगवान बुद्ध नेपाल गये थे। इनके उपदेशों को सुनकर किरात जाति बौद्ध हो गयी थी। काठमाण्डू से 20 मील पूर्व स्वयंभू पर्वत के पश्चिम 'नमुरा' नामक स्थान पर 'शुच्छाग्र' नामक स्तूप है जिसे बुद्ध की नेपाल यात्रा का स्मारक माना जाता है, यहाँ बुद्ध ने निवास किया था।

उल्लेखनीय है कि नेपाली संस्कृति में भारतीय धर्म एवं देवी-देवताओं से संबंधित कई महत्वपूर्ण सूचनाएँ विद्यमान हैं जो प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रवहमान हैं। ऐसी ही कुछ धार्मिक परंपराओं की सूचना प्राचीन नेपाली संस्कृत अभिलेखों से प्राप्त होती है। ज्ञातव्य है कि आर0 ग्नोली महोदय एक इटालियन

विद्वान हैं, इन्होंने नेपाल से प्राप्त लगभग[9] 89 संस्कृत अभिलेखों को संग्रहीत कर प्रकाशित किया। सभी अभिलेख गुप्तकालीन लिपि एवं संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण हैं, साथ ही इन्हें किसी न किसी प्रतिमा एवं लिंगादि पर उत्कीर्ण किया गया है। इन संस्कृत अभिलेखों में कतिपय संस्कृत के गूढ़ एवं महत्वपूर्ण छन्दों एवं अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है, जैसा कि गुप्त शासकों के अभिलेखों में प्रयुक्त किया गया है। इन संस्कृत अभिलेखों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनमें से अधिकांश लेखों में शिव के लिंग स्वरुप का उल्लेख किया गया है। जिन देवी-देवताओं को अधिकांशत: इन अभिलेखों में उल्लखित किया गया है, उनमें शिव, विष्णु, इन्द्र के साथ उमा एवं लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य प्राप्त होता हैं।

अभिलेखों में शिव तत्व की प्रधानता से स्पष्ट होता है कि इस कालखण्ड में शिव एक व्यापक देवता के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे। नेपाल के लाजनपाट नामक स्थान से 466 ई0 में स्थापित शिवलिंग प्राप्त हुआ है, जो ज्येष्ठ मास में चतुर्दशी को स्थापित किया गया था।[10]

राजा मानदेव द्वारा 491 ई0 में एक अन्य शिवलिंग स्थापित करने का अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है।[11] नेपाल स्थित पशुपति नाथ मंदिर के चारों द्वारों पर विभिन्न काल खण्ड में बने हुए शिवलिंग स्थापित किये गये हैं जो तत्कालीन समाज में शिव की प्रधानता के द्योतक हैं। शैव धर्म की व्यापकता का अप्रतिम उदाहरण लगभग 400 ई0 में स्थापित श्री पशुपतिनाथ मंदिर है जिसके बारे में एक कथा प्रचलित है। नेपाल महात्म्य एवं हिमवंत खण्ड पर आधारित स्थानीय किवदंति के अनुसार एक बार भगवान शिव वाराणसी में अन्य देवताओं को छोड़कर बागमती नदी के किनारे स्थित मृगस्थली में चकोर पक्षी का रूप धारण कर चले गये, बहुत खोजने पर वर्तमान पशुपतिनाथ मंदिर में चतुर्मुख लिंग रूप में प्रकट हुए। ऐसी ही कई अन्य रोचक एवं महत्वपूर्ण दन्त कथाएँ प्रचलित हैं।

शिव के पश्चात् विष्णु की उपासना का साक्ष्य प्राप्त होता है। 467 ई0 में स्थापित भगवान विष्णु की विक्रान्त स्वरूप की प्रतिमा मंदिर के समीप से प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा राजा श्री मानदेव द्वारा बैशाख मास के शुक्ल पक्ष द्वितीया को स्थापित की गयी है।[12] देवताओं के इस क्रम में भगवान इंद्र की उपासना उनके दिवाकर स्वरूप की प्रतिमा स्थापित करने का स्पष्ट साक्ष्य नेपाल नरेश मानदेव द्वारा स्थापित बहाल नामक स्थल से प्राप्त लेख से प्राप्त होता है।[13] देवियों में उमा[14] लक्ष्मी[15] आदि का उल्लेख प्राप्त है। इसके अलावा कई धार्मिक प्रतीक चिन्ह जैसे- शंख एवं चक्र[16] के साथ ही बृषभ[17] आदि का अंकन इन अभिलेखों के साथ ही प्राप्त होते हैं। उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय मुद्राओं एवं अभिलेखों में भी कतिपय इसी कालखण्ड में अनेकश: देवी-देवताओं के साक्ष्य मिलने लगते हैं। जहाँ आहत एवं जनपदीय मुद्राओं पर शंख, चक्र, बृषभ आदि का अंकन मिलता है, वहीं शक-कुषाण मुद्राओं पर एकाधिक स्वरूप में शिव का मानवरूप में अंकन स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है। जिसमें शिव को तृशीर्ष एवं चतुर्भुज रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसी क्रम में घोषुण डी अभिलेख, गरूड़ध्वज स्तम्भ लेखादि में देव प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य उपलब्ध है। नेपाल में न केवल देवी-देवताओं की प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य मिलता है, अपितु पितृभक्ति प्रदर्शन हेतु नेपाल नरेश मानदेव ने अपने पिता के प्रति आदर एवं दैवीय शक्ति स्वीकार करते हुए उनकी प्रतिमा स्थापित कर उपासना की।[18] रामायण के अनुसार, नगर में प्रवेश द्वार के समीप ही देवकुल स्थापना एवं उसमें मृत राजाओं की प्रतिमा स्थापित करने का विवरण हैं जिसमें कहा गया है राजा दशरथ की मृत्यु के समय भरत ननिहाल में थे, वापस आते समय उन्होने देवकुल में अन्य मृत राजाओं के साथ ही राजा दशरथ की प्रतिमा को देखा, जिसके बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका स्वर्गवास हो चुका है। इसके अलावा कुषाण कालीन शासकों में भी मृत शासकों की प्रतिमा स्थापित करने का प्रचलन था।

उक्त सभी धार्मिक मान्यताओं के आलोक में कहा जा सकता है कि तत्कालीन नेपाली एवं भारतीय संस्कृतियों में एकरूपता का जो भाव उभर कर सामने आया वह आज वर्तमान परिवेश में भी दृष्टिगत है। सारांशत: कह सकते हैं कि भारत एवं नेपाल की न केवल धार्मिक भावना है, अपितु सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ कहीं न कहीं एक ही मूल से सृजित परिलक्षित होते हैं।

सन्दर्भ:-

1. 'ए कन्ट्री स्टडी ऑफ नेपाल', फेडरल रिसर्च, कांग्रेस लाईब्रेरी, 2005, पृ.10
2. रेगमी, डी.आर., 'एंशियंट एण्ड मेडुअल नेपाल', काठमाण्डू, 1952, पृ. 2
3. श्रीवास्तव, काशी प्रसाद, 'नेपाल का इतिहास', नई दिल्ली, 1986, पृ. 6
4. गैरोला, वाचस्पति, 'भारत के उत्तर- पूर्व सीमांत देश', नई दिल्ली, पृ. 148
5. गोयल, श्रीराम, 'प्राचीन नेपाल का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास', वाराणसी, पृ. 15
6. बॉशम, ए. एल., गोयल, श्रीराम, 'प्राचीन नेपाल की राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की भूमिका', पृ. च
7. स्वयंभू पुराण, स्कन्दपुराण, 'नेपाल महात्म्य'।
8. अग्रवाल, कृष्णदेव, 'इम्पॉरटेन्स ऑफ नेपाली संस्कृत इन्सक्रप्शन्स', राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान प्रकाशन नई दिल्ली, 2010, पृ. 54
9. उपरोक्त, पृ. 89
10. उपरोक्त, पृ. 50
11. उपरोक्त, पृ. 45
12. उपरोक्त, पृ. 52
13. उपरोक्त, पृ. 89
14. उपरोक्त, पृ. 98
15. उपरोक्त, पृ. 53
16. उपरोक्त, पृ. 85
17. उपरोक्त, पृ. 380
18. उपरोक्त, पृ. 54

◆◆◆